सुनो कहानी

विष्णु प्रभाकर

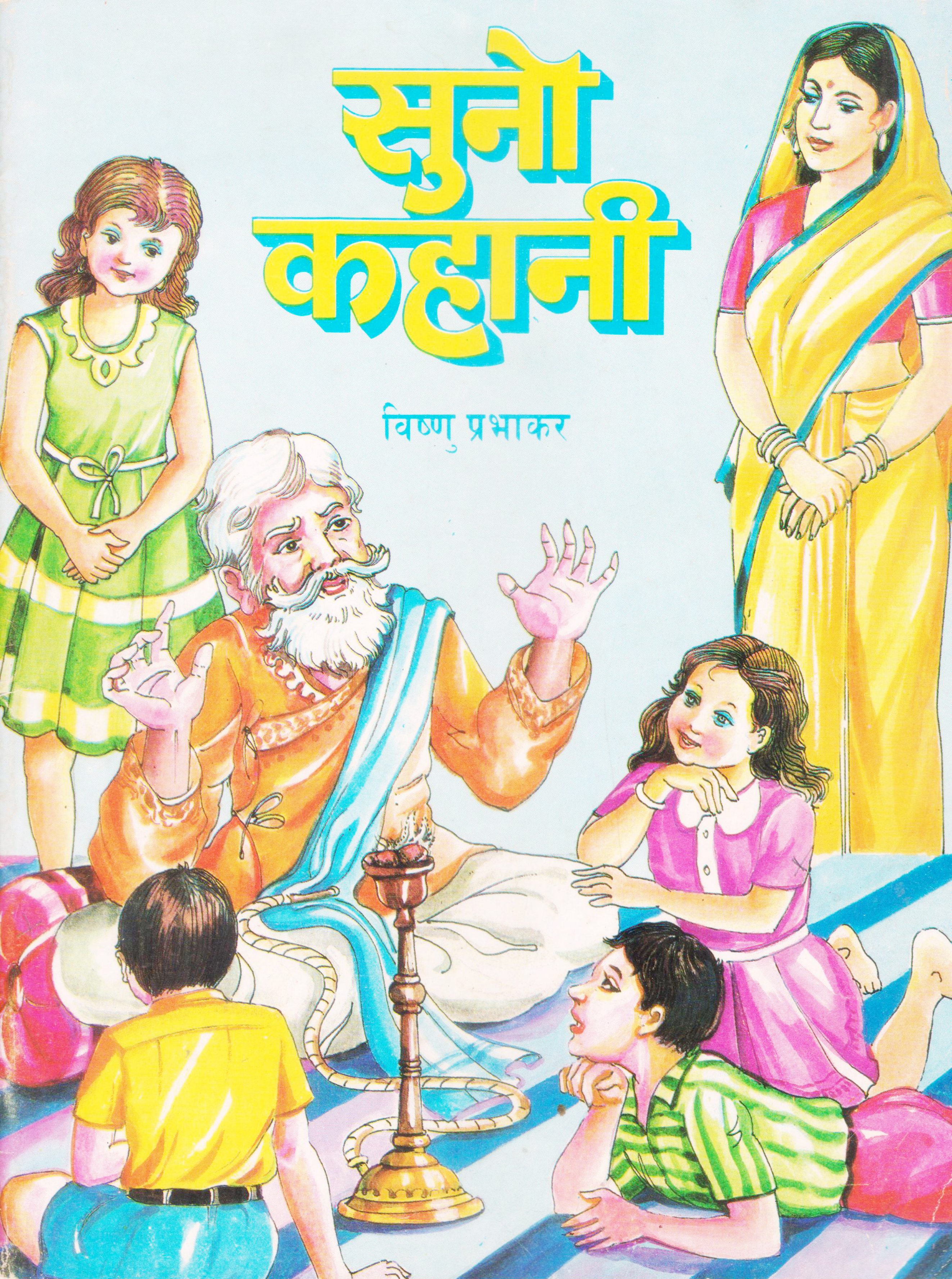

सुनो कहानी

रूपान्तरकार

विष्णु प्रभाकर

चित्रांकन

मृणाल बोस

साहित्य अकादेमी

© Sahitya Akademi

Reprinted, 1996

ISBN 81-7201-092-

SAHITYA AKADEMI

Rabindra Bhavan, 35, Ferozeshah Road,
New Delhi 110 001
Sales : 'Swati', Mandir Marg, New Delhi 110 001
Jeevan Tara Building, 4th Floor,
23A/44X, Diamond Harbour Road, Calcutta 700 053
172, Mumbai Marathi Grantha Sangrahalaya Marg,
Dadar, Bombay 400 014
Guna Building, Nos. 304-305, Anna Salai, Teynampet,
Madras 600 018
ADA Rangamandira, 109, J.C. Road, Bangalore 560 002

साहित्य अकादेमी
प्रधान कार्यालय
रवीन्द्र भवन, 35, फिरोजशाह मार्ग, नयी दिल्ली 110 001
विक्रय विभाग : स्वाति, मंदिर मार्ग, नयी दिल्ली 110 001
क्षेत्रीय कार्यालय
जीवनतारा बिल्डिंग, चौथी मंजिल, 23ए/44 एक्स.,
डायमंड हार्बर रोड, कलकत्ता 700 053
304 & 305 अन्ना सालई, तेनामपेट, मद्रास 600 018
172, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई 400 014
ए डी ए रंगमंदिर, 109, जे.सी.मार्ग, बंगलौर 560 002

मूल्य : पच्चीस रुपये

Published by the Sahitya Akademi and printed at
Compudata Services, New Delhi-110014.

अपनी ओर से

कहानी का जन्म कब हुआ, कोई नहीं जानता । जब आदमी को होश आया होगा, तभी शायद उसने कहानी कहना और सुनना शुरू किया होगा । सब धर्मों की किताबों में तरह-तरह की कहानियाँ मिलती हैं । उपदेश देनेवाली कहानियाँ, हँसानेवाली कहानियाँ, मूर्खों की कहानियाँ और बुद्धिमान लोगों की कहानियाँ ।

आज हम तुम सबको ऐसी ही एक पुरानी किताब में लिखी हुई कुछ कहानियाँ सुनाना चाहते हैं । इस किताब का नाम है – कथा सरित् सागर । इसको लिखा है – सोमदेव भट्ट ने ।

सोमदेव ने ये कहानियाँ अपने मन से नहीं लिखीं बल्कि पहले से चली आई बहुत सी कहानियों को नया रूप देकर लिखा है । धार्मिक किताबों के अलावा कहानी की जो किताब सबसे पहले लिखी गई, उसका नाम था – बृहत्कथा । यह पैशाची भाषा में लिखी गयी थी । उस भाषा में इसका नाम था – 'बड्ड कथा' और जो आज से दो हज़ार साल पहले लिखी गई थी ।

बाद में इसी पुस्तक को सामने रख कर पंडितों ने संस्कृत में कई किताबें लिखीं । 'बृहत्कथा - श्लोक संग्रह' और 'बृहत्कथा मंजरी' आदि । कहते हैं कि कश्मीर की महारानी को 'बृहत्कथा मंजरी' अच्छी नहीं लगी । उसने सोमदेव भट्ट से निवेदन किया कि वे इसी पुस्तक के जैसी रोचक भाषा में एक नई पुस्तक लिखें ।

तब सोमदेव भट्ट ने बहुत ही रोचक भाषा में फिर से उन्हीं कहानियों को लिखा, उन्होंने कुछ और नई कहानियाँ भी उनमें जोड़ दीं । यह बहुत ही सरल भाषा में लिखा हुआ एक रोचक ग्रंथ है । इसमें मुख्य कथा तो राजा उदयन के पुत्र नरवाहन दत्त की है । लेकिन बीच-बीच में और भी रोचक कथाएँ जोड़ दी गई हैं । ये सब कथाएँ राजा के दोस्त उन्हें सुनाते हैं ।

उन्हीं में से कुछ रोचक कहानियाँ हमने अपनी भाषा में फिर से तुम्हारे लिए लिखी हैं । इनमें बहुत-सी ऐसी कहानियाँ हैं, जो तुमने अपनी दादी या नानी से सुनी होंगी, या कहीं-न-कहीं पढ़ी होंगी । सारे देश में और सारे विश्व में भी ये या ऐसी ही दूसरी कहानियाँ पढ़ी और सुनी जाती हैं ।

तो आओ, एक बार फिर हम उन्हीं कहानियों को पढ़ें और सुनें ।

– विष्णु प्रभाकर

खण्ड 1

सोचो और सोचो

अशर्फियों का चोर	5
बगुला भगत और बुद्धिमान मगर	9
बुद्धिमान खरगोश	11
तीन मछलियाँ	14
धर्मबुद्धि और दुष्टबुद्धि	16
बनिये की तराजू	19
सच्चा मित्र	21
दो भाई	24
खरगोश और हाथी	27
दो दोस्त	30
कानों का सुख	34
बेचारा नेवला	36

खण्ड 2

हँसो और हँसो

रूई कैसे साफ़ की गई	38
गंजा मूर्ख	40
मूर्ख ब्राह्मण	42
सातवीं पूरी	44
मूर्ख सेवक	46
दो मूर्ख शिष्य	48
मूर्ख दामाद	50
एक मूर्ख कंजूस	52
बिलाव और ब्रह्मचारी	55
सुंदर बैल	57
विचित्र रास्ता	59

अशर्फियों का चोर

प्राचीन काल में एक नगरी थी, उसका नाम था – श्रावस्ती । वहाँ प्रसेनजित नाम का एक राजा राज्य करता था । उसी नगर में किसी दूसरे देश का एक ब्राह्मण भी, अपने मित्र के घर में रहता था । वह ब्राह्मण बनियों का पुरोहित था । उसे खूब पैसा मिलता था, और वह उस पैसे को जोड़ा करता था ।

इस तरह उसने दो हज़ार अशर्फियाँ जोड़ लीं । और फिर उनको पास के जंगल में एक पेड़ के नीचे गाड़ दिया । घर में रखता तो चोरों के चुरा ले जाने का डर था । बैंक तब थे नहीं । लेकिन उसका मन अब भी शान्त नहीं हुआ । उसे बराबर यह शंका लगी रहती थी, कि कहीं कोई उन अशर्फियों को वहाँ से भी खोद कर न ले जाए ।

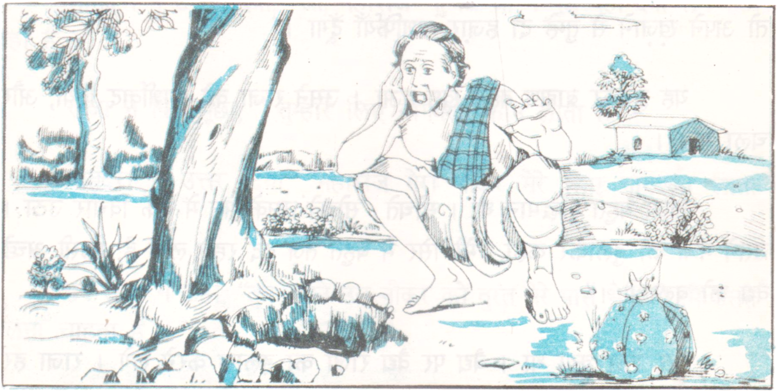

और सचमुच एक दिन ऐसा हो गया । वह रोज़ उन अशर्फियों को देखने जाया करता था । उस दिन भी गया लेकिन क्या देखा कि किसी ने उस स्थान को खोद

डाला है और अशर्फियाँ निकाल ली हैं । अब तो उसके जैसे प्राण ही निकल गए । बहुत - बहुत दुख हुआ उसे । उसने सोचा, अब जी कर क्या होगा । इससे तो मर जाना अच्छा है । लेकिन मरना भी क्या आसान है ! अब करे तो क्या करे ?

इसी उधेड़-बुन में एक दिन उसने इस बात की चर्चा अपने मित्र से की । उसके बाद वह कहानी एक कान से दूसरे कान, दूसरे कान से तीसरे कान होती हुई राजा के पास पहुँच गई । सुनकर राजा को भी बहुत दुख हुआ । उसने ब्राह्मण को बुलाकर पूछा, "तुमने किस पेड़ की जड़ में वे अशर्फियाँ छिपाई थीं ?"

ब्राह्मण ने उत्तर दिया, "महाराज, मैंने नागबला के पेड़ के नीचे अपनी अशर्फियाँ गाड़ी थीं । "

राजा ने सुना, एक मिनट सोचा, फिर कहा, "तुम चिन्ता मत करो, मैं पता लगाकर छोड़ूँगा कि किसने तुम्हारी अशर्फियाँ चुरायी हैं और अगर पता नहीं लगा सका, तो अपने ख़ज़ाने से तुम्हें दो हज़ार अशर्फियाँ दूँगा ।"

यह सुनकर ब्राह्मण बहुत खुश हुआ । उसने राजा को आर्शीवाद दिया, और चला गया ।

राजा बहुत बुद्धिमान था । सोचते - सोचते उसके मन में एक विचार उठा । उसने मंत्री को बुलाकर कहा, "मेरे सिर में बहुत तेज़ दर्द रहने लगा है, किसी अच्छे वैद्य को बुलाओ ।"

बस, फिर क्या था । वैद्य पर वैद्य राजा का इलाज करने लगे । राजा हर वैद्य से एक सवाल जरूर पूछता था, "आजकल तुम्हारे पास कितने रोगी आते हैं, उन्हें क्या-क्या दवा देते हो ?"

सभी वैद्य राजा को खुश करने के लिए बढ़ा-चढ़ा कर जवाब देते थे । एक दिन एक वैद्य ने, राजा के इसी प्रश्न के उत्तर में, निवेदन किया, मैं अपने एक रोगी को नागबला को दवा के रूप में प्रयोग करने के लिए कहता हूँ ।

फिर राजा ने पूछा, " तुम्हारे उस रोगी का क्या नाम है ?"

वैद्य ने कहा, " महाराज उसका नाम मातृदत्त है ।"

वैद्य के जाने के बाद महाराज ने मंत्री को बुलाया और कहा, "जैसे भी हो, मातृदत्त को बुलावा भेजो ।"

मातृदत्त तो उसी शहर में रहता था । उसे ढूँढ़ने में क्या कठिनाई होती ? थोड़ी ही देर में वह राजा के सामने पेश कर दिया गया । राजा ने उससे पूछा, " क्या तुम नागबला का प्रयोग करते हो ?"

मातृदत्त ने उत्तर दिया, "जी, महाराज ! वैद्य जी ने मुझे वही दवा लेने का कहा है ।"

राजा ने फिर पूछा, " तुम्हारे लिए नागबला कौन लाता है ?"

मातृदत्त ने उत्तर दिया, "महाराज मेरा नौकर मेरे लिए नागबला लाता है ।"

तब राजा ने कहा, "तुम अपने उस नौकर को तुरंत मेरे पास भेज दो, मैं उससे मिलना चाहता हूँ । "

नौकर ऊपर से तो बहुत प्रसन्न था, पर न जाने क्यों, अंदर-ही-अंदर डर भी रहा था ।

राजा ने उससे पूछा, "क्या तुम अपने स्वामी के लिए नागबला लाते हो ?"

नौकर ने हाथ जोड़कर और सिर झुकाकर कहा, " हाँ महाराज, मैं ही लाता हूँ ।"

तब राजा बोले, " हमें मालूम हुआ है, तुम्हें नागबला की जड़ में से एक हज़ार अशर्फियाँ मिली हैं । वे अशर्फियाँ एक ब्राह्मण की हैं । जाओ और अभी उन्हें उन ब्राह्मण देवता को सौंप दो ।"

नौकर क्या कर सकता था ! वह अशर्फियाँ ले आया और उन्हें ब्राह्मण को सौंप दिया ।

बगुला भगत और बुद्धिमान मगर

एक था तालाब । उसमें बहुत-सी मछलियाँ रहती थीं । वहीं एक बगुला भी रहता था । वे मछलियाँ उस बगुले से बहुत डरती थीं, और उससे दूर-दूर रहती थीं ।

बगुले ने सोचा, "यह तो बड़ी ख़राब बात है, इनको किसी तरह अपने जाल में फँसाना चाहिए । " सोचते-सोचते उसे एक तरकीब सूझ ही गई । वह मछलियों के पास पहुँचा और उनसे बोला, "मैंने एक बहुत बुरी ख़बर सुनी है । एक मछेरा जाल लेकर इधर ही आ रहा है । मैंने उसे देखा है । वह तुम सबको जाल में फँसा कर मार डालेगा, और खा जाएगा ।"

मछलियाँ उस बगुले का विश्वास तो नहीं करतीं थीं, लेकिन मछुए से वे बहुत डरती थीं । उन्होंने पूछा, "हमें अब क्या करना चाहिए ?"

बगुला बड़े गंभीर स्वर में बोला, "अगर तुमको मुझ पर विश्वास है, तो मैं एक रास्ता जानता हूँ । पास के घने बन में कुछ दूरी पर एक तालाब है । उसका जल अमृत जैसा है । मछेरों को उस तालाब के बारे में कुछ पता नहीं । तुम चाहो तो मैं एक-एक करके तुम सब को वहाँ पहुँचा दूँगा ।"

मछलियाँ तो बहुत बुरी तरह डर गई थीं । इसलिये उनकी बुद्धि काम नहीं कर रही थी । उन्होंने कहा, "हमें तुम पर पूरा विश्वास है । कृपा कर तुम हमें उस तालाब पर ले चलो ।"

यह सुन कर बगुला मन-ही-मन बहुत खुश हुआ और वह बारी-बारी से एक-एक मछली को उस झूठ-मूठ के तालाब पर ले जाता और मार कर खा जाता ।

उस तालाब में एक मगरमच्छ भी रहता था । बगुला इन मछलियों को कहाँ ले जाता है, यह जानने के लिए उसने पूछा, "तुम इन मछलियों को कहाँ ले जाते हो ?"

बगुले ने मगर को वही कहानी सुना दी, जो मछलियों को सुनायी थी। मगर था तो बहुत ताक़तवर, लेकिन मछेरों के जाल से वह भी डरता था। उसने बगुले से कहा, "मुझे भी तुम उस तालाब पर पहुँचा दो।"

बगुला बहुत खुश हुआ, और अगले दिन मगर को साथ लेकर उसी जगह पहुँचा, जहाँ वह मछलियों को मार कर खाया करता था

मगर उस स्थान को देखते ही सब कुछ समझ गया। यह बगुला बहुत मक्कार है। मछलियों को यहाँ लाकर खा जाता है। मुझे भी इसी तरह मार डालेगा।

लेकिन वह मगर मछलियों जैसा डरपोक नहीं था। उसने सोचना शुरू किया, "अरे, मैं तो मगर हूँ। मैं उस बगुले से डर जाऊँगा। नहीं, नहीं।"

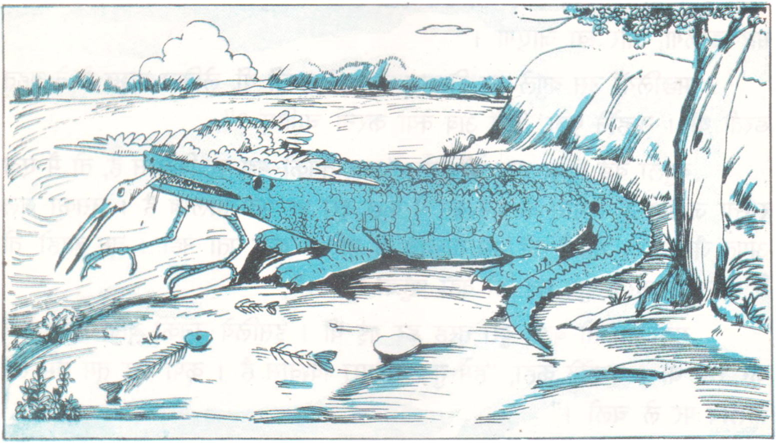

यह सोचते-सोचते उसने बगुले का गला पकड़ लिया। और उसे मार डाला। और लौटकर बची हुई मछलियों को सारी कहानी सुनाई। बगुले की दुष्टता की बात सुनकर उन्हें बहुत दुख हुआ पर उनकी जान बच गयी। इससे उन्हें खुशी भी कम नहीं हुई।

बुद्धिमान खरगोश

एक बहुत बड़ा जंगल था । और उसमें एक बहुत ही ताक़तवर सिंह रहता था । वह किसी भी पशु को देखता और पकड़कर उसे खा जाता ।

जब कई दिन तक ऐसा ही होता रहा, तो दूसरे जानवर बहुत घबराए । उन्होंने आपस में सलाह की और फिर वे सब मिल कर सिंह के पास पहुँचे । बोले, "आप तो हमारे राजा हैं । आप क्यों रोज़-रोज़ परेशान होते हैं ? हम आपको एक पशु रोज़ भेज दिया करेंगे ।"

यह सुनकर सिंह बहुत प्रसन्न हुआ । उसने कहा, "अगर तुम अपने वचन का पालन करोगे तो मैं और किसी को नहीं मारूँगा ।"

उसके बाद हर रोज़ ठीक समय पर एक पशु सिंह के पास पहुँच जाता, और वह उसको मारकर अपनी भूख शांत करता ।

एक दिन एक खरगोश की बारी आई । वह बड़ा चालाक था और चतुर भी । उसने सोचा, कि क्या बचने का कोई रास्ता नहीं हो सकता ? जो बुद्धिमान होते हैं वे आपत्ति और विपत्ति में भी नहीं घबराते । मुझे भी नहीं घबराना चाहिए और ऐसा काम करना चाहिए, जिससे हम सब की रक्षा हो सके ।

यही सब सोचते-सोचते उसे सिंह के पास पहुँचने में देर हो गई । सिंह गुस्से में भर उठा, और जब खरगोश वहाँ पहुँचा तो उसने गरज कर पूछा, "तूने मेरे पास आने में देर क्यों की ?"

खरगोश ने बिना किसी डर के जवाब दिया, "हे स्वामी ! मैंने जानबूझ कर देर नहीं की । हुआ यह कि जब मैं आ रहा था, तो रास्ते में अचानक एक दूसरा शेर मिल गया । वह बहुत बलवान था । उसने मुझे रोक लिया । मैंने किसी तरह से झूठ बोल कर उससे कहा, कि मैं एक ज़रूरी काम से जा रहा हूँ, जल्दी ही लौट आऊँगा ।" तब कहीं जाकर उसने मुझे छोड़ा ।

यह सुनकर सिंह की आँखें क्रोध से लाल हो उठीं । उसने ज़ोर से अपनी पूँछ को पटका और दहाड़ कर बोला, "मेरे राज्य में यह दूसरा शेर कैसे आया ? मुझे बताओ, वह कहाँ रहता है ?"

खरगोश ने उसी तरह शांत भाव से कहा, "हे स्वामी ! आइए, मैं आपको उसके रहने की जगह दिखाता हूँ ।"

उसके बाद आगे-आगे खरगोश और पीछे-पीछे सिंह । दोनों चलते-चलते एक कुएँ के पास पहुँचे । खरगोश ने कहा, "हे स्वामी ! वह दूसरा सिंह इस कुएँ में रहता है, आप खुद झाँककर देख लीजिए ।"

शेर ने कुएँ में झाँका । कुएँ के पानी मे उसे उसकी अपनी परछाईं दिखाई दी । उस परछाईं को उसने दूसरा सिंह समझा । और फिर तो वह बड़े ज़ोर से दहाड़ने लगा ।

जैसे ही वह दहाड़ा । कुएँ में से उससे भी ज़ोर से दहाड़ने की आवाज़ आई । यह उसके दहाड़ने की गूंज थी । लेकिन वह तो मूर्ख था, उसने समझा यह दूसरा सिंह मुझसे भी तेज दहाड़ रहा है । मैं इसे अभी मार डालता हूँ ।

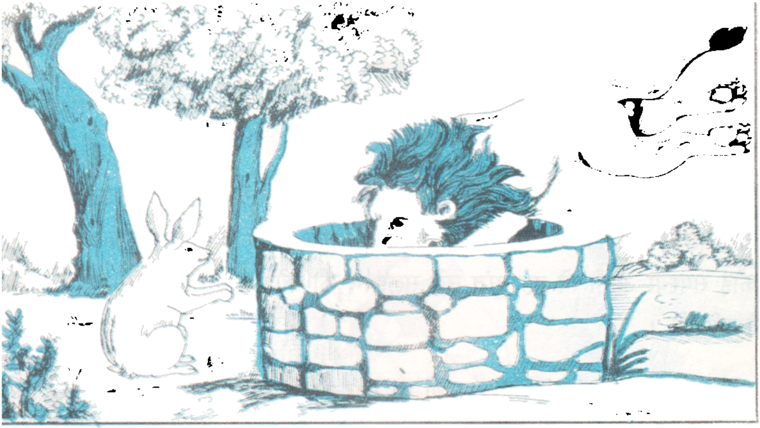

और इस प्रकार सोचते हुए उसने कुएँ में छलाँग लगा दी और पानी में डूबकर र गया ।

खरगोश खुशी से भर कर अपने दोस्तों के पास लौटा और उन्हें सारी कहानी ुनाई । वे सब बहुत प्रसन्न हुए और सुखपूर्वक जंगल में रहने लगे ।

तीन मछलियाँ

एक बहुत सुंदर बन था । उसमें वैसा ही सुंदर एक तालाब भी था । उस तालाब में तीन मछलियाँ रहती थीं । तीनों के स्वभाव अलग-अलग थे । पहली के सामने अगर कोई समस्या आती तो वह तुरंत उसे सुलझाने की कोशिश करती, किसी की राह नहीं देखती थी ।

दूसरी मछली भी होशियार थी, पर वह तुरंत ही कुछ करने में विश्वास नहीं करती थी । वह सोचती थी समय पर जैसा होगा, वैसा कर लिया जाएगा । अभी से क्यों परेशान हुआ जाए ?

तीसरी मछली कुछ भी नहीं·सोचती थी । वह तो यह मानती थी कि जो भगवान को मंजूर है, वही होगा ।

एक दिन उन्होंने कुछ मछेरों को जाते हुए देखा । वे आपस में बात कर रहे थे कि "इस तालाब में बहुत अच्छी मछलियाँ हैं । उन्हें पकड़ना चाहिए ।"

पहली मछली यह सुनते ही जल की बहती धारा के साथ दूसरे तालाब में चली गई ।

दूसरी मछली ने भी मछुओं की बातें सुनीं और सोचा पहले इन्हें आने तो दो, तब जैसा ठीक समझूँगी, कर लूँगी ।

सुना तीसरी मछली ने भी । लेकिन उसने कोई चिन्ता नहीं की । जो होना है, वह तो होगा ही । उसे कौन रोक सकता है ?

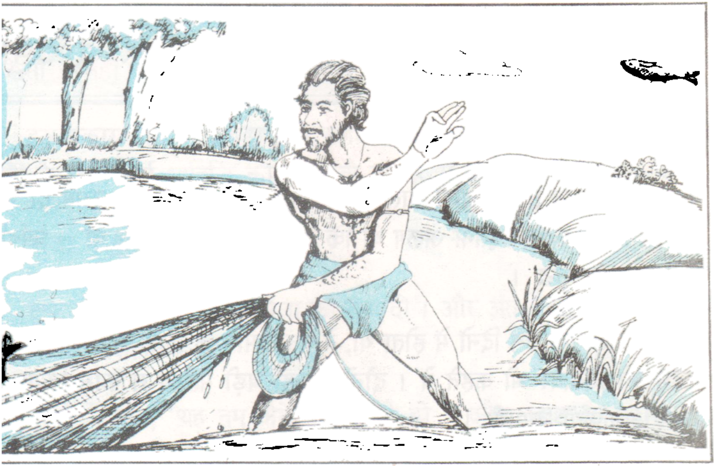

जैसा कि हो सकता था वे मछुए दूसरे दिन ही जाल लेकर आ पहुँचे । पहली तो दूसरे तालाब में पहुँच चुकी थी । दूसरी मछली जाल को देखते ही ऐसे लेट ासे मर गयी हो । मछुओं ने उसे देखकर सचमुच ही मरा हुआ समझ लिया, ठाकर एक तरफ़ फेंक दिया । बस उसे मौक़ा मिल गया और वह भी चुपके । जल की धारा में कूद गई और दूसरे तालाब में पहुँच गई । तीसरी मछली ने कुछ सोचा न कुछ किया वह जाल में फँस गई और तड़प - तड़प कर मर

धर्मबुद्धि और दुष्टबुद्धि

बहुत पुरानी बात है । हज़ारों साल पुरानी बात । एक शहर था, उसमें दो भाई रहते थे । दोनों का स्वभाव इतना अलग था कि एक का नाम पड़ गया था – धर्मबुद्धि और दूसरे का दुष्टबुद्धि ।

जैसा कि उन दिनों में होता था, वे धन कमाने के लिए परदेश गए । उन दिनों परदेश को दिसावर भी कहते थे । दोनों ने वहाँ बड़ी मेहनत से काम किया, और दो हज़ार अशर्फियाँ कमायीं ।

जब वे अपने देश लौट रहे थे, तो अपने घर के पास आकर उन्होंने आपस में सलाह की और एक हज़ार अशर्फियाँ एक पेड़ के नीचे गाड़ दीं । कभी मुसीबत पड़ी तो काम आयेंगी । बाकी एक हज़ार अशर्फियाँ दोनों ने आपस में बाँट लीं ।

एक दिन दुष्टबुद्धि के मन में एक दुष्ट विचार आया कि क्यों न मैं वे एक हज़ार अशर्फियाँ जो पेड़ की जड़ में दबी हुई हैं, निकाल लाऊँ । तब मैं बहुत पैसे वाला हो जाऊँ ।

उसने ऐसा ही किया और फिर कुछ दिन बाद धर्मबुद्धि के पास पहुँचा । बोला, "भाई, चलो उन अशर्फियों को भी बाँट लें ।"

धर्मबुद्धि को इस पर क्या आपत्ति हो सकती थी ! उसने कहा, "अगर तुम ऐसा ही चाहते हो तो चलो, हम वहीं चलते हैं ।"

लेकिन जब वे दोनों वहाँ पहुँचे और पेड़ की जड़ के नीचे खोदा तो, वहाँ कुछ भी नहीं था ।

धर्मबुद्धि बहुत चकित हुआ । लेकिन दुष्टबुद्धि ने तुरंत कहा, "भाई, ये अशर्फियाँ और किसी ने नहीं लीं, तुम्हीं ने निकाली हैं, तुम्हें मेरा आधा भाग देना होगा ।"

इस प्रकार दोनों में झगड़ा होने लगा । बात बहुत बढ़ गई । यहाँ तक कि दुष्टबुद्धि ने अपने भाई धर्मबुद्धि को राजा के दरबार में जाने को विवश कर दिया ।

राजा ने पूछा, "क्या मामला है ?"

दुष्टबुद्धि ने सारी कहानी राजा को सुना दी । और अंत में कहा, "ये अशर्फियाँ धर्मबुद्धि ने ही निकाली हैं ।"

राजा ने पूछा, "यह तुम कैसे कह सकते हो ? कौन गवाह है तुम्हारा ?"

दुष्टबुद्धि ने कहा, "मेरा गवाह वह पेड़ ही है ।"

उसकी यह बात सुन राजा और न्यायमन्त्री बहुत चकित हुए और बोले, "अच्छा, वह पेड़ तुम्हारा गवाह है । तो हम कल सुबह वहाँ चलेंगे और उससे स्वयं पूछेंगे ।"

दोनों भाई अपने-अपने घर चले गए ।

धर्मबुद्धि को कोई चिंता नहीं थी । वह मानता था कि धर्म उसके साथ है । जीत उसी की होगी । लेकिन दुष्टबुद्धि ने घर पहुँच कर सब कहानी अपने पिता को बताई और उनसे कहा, "आप अभी जाकर उस पेड़ की खोल में छिप जाओ । सवेरे जब राजा के अधिकारी पूछें तो उनसे कहना कि ये अशर्फियाँ धर्मबुद्धि ने ही निकाली हैं ।"

पिता ने ऐसा ही किया । वह रात में जाकर खोल में छिप गया । सवेरे जब न्यायमन्त्री वहाँ पहुँचे तो उन्होंने पेड़ से पूछा, "क्या तुम बता सकते हो कि जो एक हजार अशर्फियाँ दोनों भाइयों ने यहाँ गाड़ी थीं, वे किसने निकाली हैं ?"

पिता ने खोल के अंदर से जवाब दिया, "अशर्फियाँ धर्मबुद्धि ने चुरायी हैं ।"

न्यायमन्त्री यह सुनकर बहुत चकित हुए । पेड़ तो बोल नहीं सकता । तब ज़रूर कोई खोल के अंदर बैठा हुआ होगा । सो, उन्होंने आदेश दिया, "इस पेड़ को आग लगा दी जाए ।"

आग लगते ही पेड़ की खोल में बैठे हुए दुष्टबुद्धि के पिता कूद कर बाहर आ गए, लेकिन तब तक वे काफ़ी जल चुके थे । बच नहीं सके ।

न्यायमन्त्री अब सब कुछ समझ गये थे । उन्होंने दुष्टबुद्धि को तुरंत आदेश दिया कि वह धर्मबुद्धि की अशर्फियाँ लौटा दे । इतना ही नहीं, उस समय के न्याय के अनुसार उन्होंने दुष्टबुद्धि का हाथ काटकर उसे देश से निकाल दिया ।

बनिये की तराजू

एक बनिया था । उसके पास लोहे की एक तराजू थी जो बाप-दादा के ज़माने से चली आ रही थी । वज़न भी उसका सवा मन था । एक बार उस बनिये को परदेस जाना पड़ा । जाते समय वह उस तराजू को अपने एक परिचित व्यापारी के पास रख गया ।

बहुत दिनों के बाद जब बनिया वापिस लौटकर आया, तो उसने अपने मित्र से अपनी तराजू वापिस माँगी ।

मित्र ने बड़े दुख के साथ जवाब दिया, "क्या कहूँ भाई, तुम्हारी तराजू तो चूहे खा गए । मुझे इसका बड़ा अफ़सोस है ।"

यह सुनकर बनिया मन-ही-मन बहुत हँसा । बोला- "सचमुच वह तराजू बहुत स्वादिष्ट थी, इसलिए चूहों ने ज़रूर उसे खा लिया होगा । कोई बात नहीं । मैं तो अभी आया हूँ । घर की सफ़ाई भी अभी नहीं हुई है । चलो, आज तुम्हारे घर ही भोजन कर लूँगा ।"

मित्र ने कहा, "ज़रूर, ज़रूर, तुम्हारा ही तो घर है ।"

भोजन करने से पहले नहाना ज़रूरी था । वह वणिक पुत्र अपने मित्र के पुत्र को साथ लेकर नदी में स्नान करने चला गया । काफ़ी देर बाद लौटा तो उसके मित्र ने देखा कि उसका बेटा तो उसके साथ है ही नहीं ।

उसने पूछा, "अरे मेरा बेटा कहाँ है ?"

बनिये ने बहुत उदास हो कर कहा, "क्या बताऊँ भाई, एक बाज आया, और तुम्हारे बेटे को लेकर उड़ गया ।"

मित्र गुस्से में भर कर बोला, "यह कैसे हो सकता है ? बाज बच्चे को कैसे उड़ाकर ले जा सकता है ? तुमने मेरे बेटे को अवश्य कहीं छिपा रखा है । तुम मुझे ठगना चाहते हो ? मैं अभी राजा के पास जाता हूँ ।"

और वह सचमुच ही राजदरबार में पहुँच गया । मित्र भी उसके साथ गया । राजा ने उनकी कहानी सुनी । फिर बनिये से कहा, "नहीं । यह सब झूठ है । बच्चे को उठाकर उड़ा ले जाना बाज के लिए संभव नहीं हो सकता । सच बताओ, बात क्या है ?"

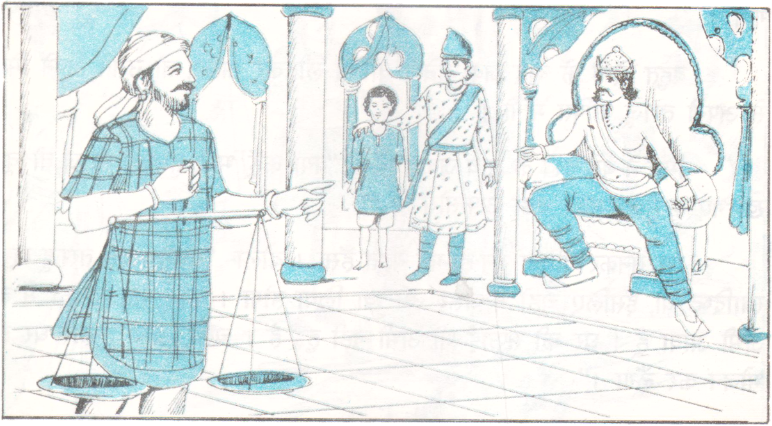

बनिये ने हाथ जोड़ कर निवेदन किया, "राजन ! जिस देश में लोहे की भारी तराजू चूहे खा सकते हैं, उस देश में बच्चे को तो क्या, हाथी को भी बाज उड़ाकर ले जा सकता है ।"

और बनिये के साथ जो कुछ हुआ था, वह सब सभासदों को बता दिया ।

राजा वह कहानी सुनकर बहुत हँसा । और उसने आदेश दिया कि बनिये का मित्र उसकी तराजू लौटा दे । और बनिया भी अपने मित्र का बेटा उसे वापस कर दे । बनिये ने ऐसा ही किया और तराजू ले आया । उसे उसका बेटा भी मिल गया ।

सच्चा मित्र

हमारे देश में एक नगर है – कन्नौज । कभी उसके राजा का नाम था – चद्रापीड़ । उसका एक सेवक था, जिसका नाम धवलमुख था । वह घर में कभी खाना नहीं खाता था । हमेशा घर से बाहर ही भोजन करता था । एक दिन उसकी पत्नी ने उससे पूछा, "आपको रोज़ कौन खाना खिलाता है ?"

धवलमुख ने उत्तर दिया, "तुम नहीं जानती, मेरे दो मित्र हैं । एक का नाम है कल्याणवर्मा, वह मुझे खूब पेट भरकर बढ़िया-बढ़िया भोजन करवाता है । दूसरे दोस्त का नाम है – वीरबाहु । वह हमेशा मेरे लिए प्राण देने को तैयार रहता है ।"

यह सुनकर उसकी पत्नी बोली, "बड़े अचरज की बात है । आपने कभी मुझे तो बताया ही नहीं। न कभी उनसे मिलवाया । मैं कल अवश्य आपके साथ चलूँगी ।"

धवलमुख ने कहा, "ज़रूर चलना ।"

और अगले दिन वह अपनी पत्नी को साथ लेकर अपने मित्र कल्याण वर्मा के घर गया । कल्याण वर्मा अपने मित्र की पत्नी को देख बहुत प्रसन्न हुआ । उसने दोनों का खूब स्वागत किया । पत्नी बहुत प्रसन्न हुई ।

दूसरे दिन वे दोनों वीरबाहु के घर गए । वे जब वहाँ पहुँचे, तो वीरबाहु पासे खेल रहा था । उसने अपने मित्र और उसकी पत्नी को देखा, उनके कुशल समाचार पूछे, और फिर पहले की तरह खेलने लगा ।

थोड़ी देर में धवलमुख अपनी पत्नी के साथ घर लौट आया । पत्नी ने कहा, "आपके मित्र कल्याणवर्मा ने हमारा कैसा आदर-सत्कार किया । लेकिन वीरबाहु ने तो केवल कुशल समाचार ही पूछा । वह कैसे तुम्हारा बड़ा मित्र हुआ ?"

धवलमुख मुस्कराया, बोला, "तुम उसकी परीक्षा लेना चाहती हो । ऐसा करो, म कल अकेली उन दोनों के पास जाओ, और उनसे कहो कि राजा मेरे पति से बहुत राज हो गया है । किसी तरह आप उनकी रक्षा कीजिये । इस पर जो कुछ वे कहेंगे । करेंगे उससे तुम्हें असलियत का पता लग जाएगा ।"

पत्नी ने ऐसा ही किया । वह पहले कल्याणवर्मा के घर गई और उन्हें सब हानी सुनायी ।

कल्याणवर्मा ने उत्तर दिया, 'देवी, मैं वणिकपुत्र हूँ, मैं राजा से कैसे लोहा ले कता हूँ । ऐसी स्थिति में तुम्हारे पति की रक्षा नहीं कर पाऊँगा ।"

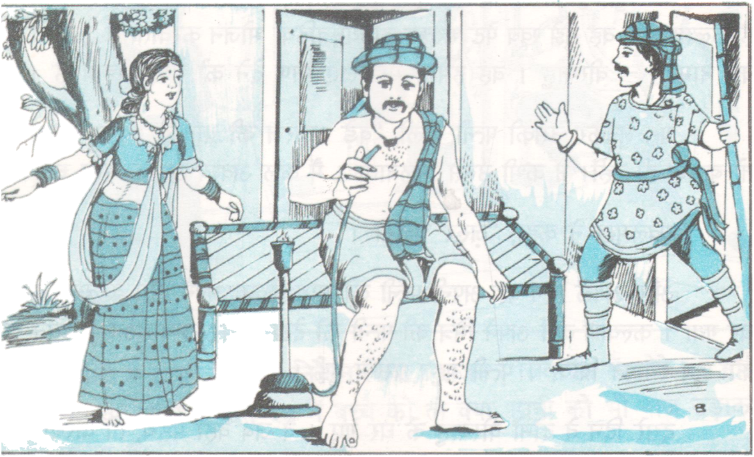

निराश होकर पत्नी वीरबाहु के पास पहुँची । उसने उसकी कहानी सुनते ही पने हथियार सँभाले और तुरंत धवलमुख के पास पहुँचा । धवलमुख ने उसे बताया क अभी-अभी मुझे समाचार मिला है कि मंत्रियों ने राजा को सही-सही बात बता दी । राजा मुझ पर प्रसन्न हो गया है । अब आपको कष्ट करने की आवश्यकता हीं ?

यह सुनकर बाहुबली बहुत प्रसन्न हुआ और अपने घर चला गया ।

तब धवलमुख ने अपने पत्नी से कहा, "देखा, तुमने मेरे इन दोनों मित्रों को । कितना और कैसा अन्तर है इनमें । एक की दोस्ती केवल बाहरी शिष्टाचार मात्र है । दूसरे की दोस्ती सचमुच की दोस्ती है । चिकनाई दोनों में है, लेकिन एक में तेल की चिकनाई है तो दूसरे में शुद्ध घी की ।"

दो भाई

बहुत पुरानी बात है । पटना नगर में दो भाई रहते थे । वे ब्राह्मण जाति के थे । बड़े भाई का नाम था यज्ञसोम और छोटे का कीर्तिसोम । उनके पिता उनके लिए बहुत - सा धन छोड़ गये थे ।

छोटा भाई कीर्तिसोम बहुत चतुर था । उसने अपना पैसा व्यापार में लगा दिया । उसे बहुत लाभ हुआ ।

बड़े भाई यज्ञसोम ने कुछ नहीं किया । सारा पैसा खाने-पीने और दान देने में ख़त्म हो गया । जब उसके पास एक भी पैसा न बचा, तो उसने अपनी पत्नी से कहा, "अपने भाइयों के बीच में निर्धन होकर रहना बड़ी लज्जा की बात है । इससे तो कहीं अच्छा है कि विदेश में जाकर मर जाएँ ।"

उसकी स्त्री ने उत्तर दिया, "बात तो आप ठीक कहते हैं, मुझे भी शर्म आती है, लेकिन कहीं जाने के लिए भी तो पैसा चाहिए । ऐसा कीजिए, कि कीर्तिसोम से रास्ते के ख़र्च के लिए कुछ पैसे माँग लाइए ।"

यज्ञसोम, कीर्तिसोम के पास पहुँचा, और सारी बातें बता दीं । फिर कहा, "मैं विदेश जाकर धन कमाना चाहता हूँ, रास्ते के ख़र्च के लिए तुम मुझे कुछ पैसा दे दो ।"

कीर्तिसोम अपने भाई की यह हालत देखकर बहुत दुखी हुआ । वह उसे कुछ धन देने के लिए भी तैयार हो गया, लेकिन जब उसने अपनी पत्नी से पूछा तो उसकी पत्नी ने उसे ऐसा करने से मना कर दिया । कहा, "तुम्हारे भाई कमाना जानते ही नहीं । आपका पैसा भी वे खाने-पीने में उड़ा देंगे ।"

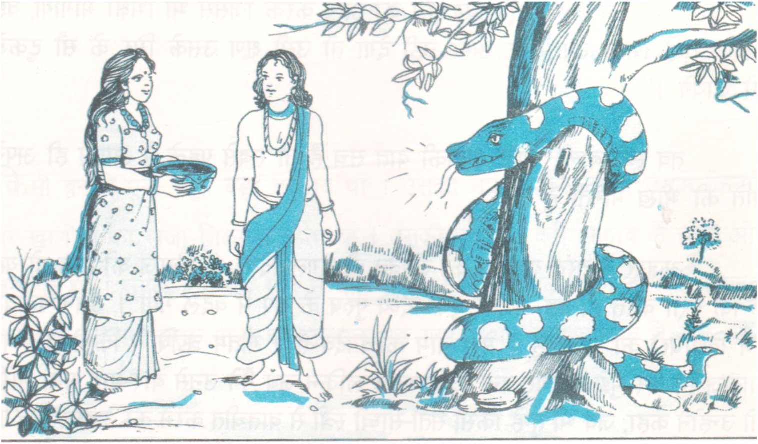

यह सुनकर कीर्तिसोम ने अपने बड़े भाई को पैसा देने से मना कर दिया तब यज्ञसोम अपनी पत्नी को लेकर बिना पैसों के ही चल पड़ा । चलते-चलते वे एव घने जंगल में पहुँचे । वहाँ उन्हें एक बड़ा भयानक अजगर दिखाई दिया । वह अजग यज्ञसोम को देखते ही उसे निगल गया । उसकी स्त्री ने जब यह देखा तो वह ज़ोर-ज़ो से विलाप करने लगी और धरती पर गिरकर लोटने लगी । तभी उसे मनुष्य की वाण सुनाई दी । वह अजगर की वाणी थी । वह मनुष्य की आवाज़ में उससे पूछ रहा थ "कल्याणी, तुम इस तरह विलाप क्यों कर रही हो ?"

पत्नी ने उत्तर दिया, "आपने इस विदेश में मुझ दुखिया का भिक्षा-पात्र छी लिया है, तब मैं विलाप कैसे न करूँ ?"

अजगर ने तुरंत अपने मुँह से एक सोने का पात्र निकाला और कहा, "यह ल भिक्षा-पात्र ।"

स्त्री बोली, "मुझ अभागिन को कौन भिक्षा देगा ?"

अजगर ने कहा, "तुम इस पात्र को आगे करके जिससे भी भिक्षा माँगोगी, वह अवश्य तुम्हें भिक्षा देगा और अगर नहीं देगा तो उसी क्षण उसके सिर के सौ टुकड़े हो जायेंगे ।"

तब स्त्री बोली, "यदि आपकी बात सच है तो सबसे पहले मैं आपसे ही अपने पति की भीख माँगती हूँ ।"

अजगर ने तुरंत यज्ञसोम को जीवित ही उगल दिया । अचरज की बात तो यह है कि ऐसा करते ही वह अजगर एक दिव्य पुरुष के रूप में बदल गया । उसने बताया, "मैं विद्याधरों का राजा हूँ । मेरा नाम कांचनदेव है । गौतम ऋषि ने किसी बात पर नाराज हो कर मुझे अजगर बना दिया था । लेकिन जब मैंने उनसे बार-बार क्षमा माँगी तो उन्होंने कहा, जब भी तुम्हें किसी सती-साध्वी स्त्री से बातचीत करने का अवसर मिलेगा तो तुम फिर से विद्याधर बन जाओगे । तुम सचमुच सती हो । तुमसे मैंने बातें कीं और ऋषि ने मुझे जो शाप दिया था वह समाप्त हो गया ।"

और उसने उस स्वर्णपात्र को रत्नों से भर दिया । उसके बाद उन दोनों से विदा लेकर आकाश-मार्ग से अपने देश चला गया ।

यज्ञसोम और उसकी पत्नी अब बहुत प्रसन्न थे । उनके पास रत्नों का ढेर था । यज्ञसोम अब यह भी समझ गया था कि काम करते रहने से ही धन बढ़ता है । वे दोनों अपने घर लौट आये और सुखपूर्वक काम करते हुए रहने लगे ।

खरगोश और हाथी

किसी बन में एक बहुत बड़ा तालाब था । उसका नाम था चंद्रसर । उसके किनारे पर खरगोशों का राजा शिलमुख रहता था । उसकी प्रजा भी वहीं तालाब के चारों ओर बस गई थी । उनके दिन बड़े सुख से बीत रहे थे । लेकिन एक साल बारिश बिलकुल नहीं हुई । चारों तरफ़ पानी का अकाल पड़ गया । बस इसी तालाब में कुछ पानी बचा रहा ।

कुछ दूर पर हाथियों का एक राजा चतुर्दंत भी रहता था । हाथियों को तो पानी खूब चाहिए । इसलिए जब और कहीं पानी नहीं मिला तो ढूँढ़ते-ढूढ़ते वे इस तालाब पर आ पहुँचे । यहाँ तो चारों ओर खरगोश रहते थे । हाथियों के आने पर वे उनके पाँवों के नीचे कुचले गये और मर गए ।

यह देख कर उनका राजा शिलमुख बहुत दुखी हुआ । उसने अपने सारे साथियों को इकट्ठा किया और कहा, "इन हाथियों को इस तालाब का पता लग गया है, अब ये रोज़ यहाँ आएँगे और हम सबको मार डालेंगे । हमें कोई ऐसा उपाय सोचना चाहिए, जिससे वे यहाँ न आ सकें ।"

उस सभा में विजय नाम का एक खरगोश था । वह बहुत ही चतुर था । मुसीबत के वक़्त वही काम आता था । राजा ने उससे कहा, "विजय, तुम हाथियों के उस राजा

के पास जाओ । और उसे कोई ऐसी बात बताओ, जिससे वह यहाँ आने का विचार छोड़ दे । तुम ही यह काम कर सकते हो । जब तुमने कोई काम करने का बीड़ा उठाया है तो तुम हमेशा कामयाब हुए हो । तुम बहुत योग्य हो, चतुर हो ।"

अपनी इतनी प्रशंसा सुनकर विजय बहुत प्रसन्न हुआ । और तुरंत हाथियों के राजा के पास चल पड़ा । जब हाथी उसे आते हुए दिखाई दिए तो वह एक पहाड़ी की चोटी पर चढ़ गया, और वहीं से बोला – "हे हाथियों के राजा ! मेरी बात सुनो । मैं भगवान चंद्रमा का दूत हूँ उन्होंने मुझे तुम्हारे पास भेजा है और कहा है कि यह चंद्रसर नाम का तालाब मेरा है । मैं इसमें रहता हूँ इसके चारों ओर रहने वाले खरगोश मेरे सेवक हैं, मैं इनका स्वामी हूँ । तुमने मेरे बहुत से सेवकों को मार डाला है । और तालाब को भी गन्दा कर दिया है ।"

हाथियों का राजा यह सब सुनकर डर गया । उसने कहा, "हे दूत, क्या सचमुच चंद्रदेव मुझसे बहुत नाराज हैं ?"

खरगोश ने गंभीर होकर उत्तर दिया, "नाराज तो बहुत थे । पर हमारे प्रार्थना करने पर इस बार उन्होंने तुम्हें क्षमा कर दिया है, और कहा है कि यदि फिर तुम कभी इस तालाब पर आओगे तो तुम्हें उसका दण्ड भोगना होगा ।"

यह सुनकर हाथी ने बड़े विनम्र भाव से कहा, "भगवान चंद्रमा मेरे पूजनीय हैं । मैं उनकी आज्ञा का पालन करूँगा । मैं फिर कभी इधर नहीं आऊँगा ।"

विजय ने मन ही मन प्रसन्न होकर कहा, "आओ, मैं तुम्हें चद्रमा के दर्शन करवाये देता हूँ, तुम उनसे स्वयं क्षमा माँग लेना ।"

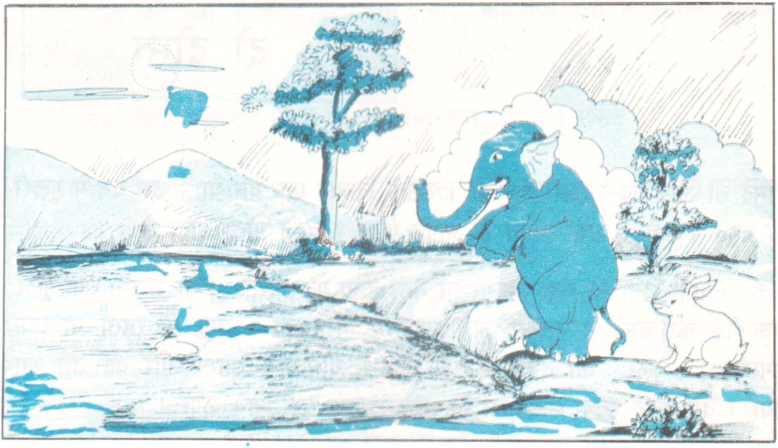

यह कहकर वह खरगोश हाथी को तालाब पर ले गया और उसमें पड़ती हुई चंद्रमा की परछाई को दिखा कर कहा, "यह हैं महाराज चंद्र ।"

हाथी ने दूर से ही उन्हें प्रणाम किया और क्षमा माँगी । उसके बाद वह फिर कभी वहाँ नहीं आया । खरगोश पहले की तरह हँसी-खुशी रहने लगे ।

समुद्र तो आप सबने देखा ही होगा । उसके किनारे एक बन था । उस बन में गूलरों के बहुत पेड़ थे । कभी खाया है आपने गूलर ? बहुत मीठा होता है ।

एक दिन एक बंदर किनारे पर बैठा हुआ गूलर खा रहा था । तभी एक गूलर एक पेड़ की डाल से टूटकर नीचे समुद्र में गिर पड़ा । समुद्र में रहता था एक मगरमच्छ । गूलर को देखकर उसके मुँह में पानी भर आया और वह उसे खा गया । वह गूलर इतना मीठा था कि उसे खाकर मगर गाने लगा ।

उसका यह मधुर गाना बंदर ने सुना । उसे बहुत अच्छा लगा । उसने मगर को बहुत सारे गूलर तोड़कर दे दिये ।

अब तो रोज़ मगर किनारे पर आता और बंदर उसे गूलर खिलाता । धीरे-धीरे दोनों में बहुत गहरी दोस्ती हो गई ।

वह दोस्ती इतनी बढ़ी कि मगर सारा दिन समुद्र के किनारे बैठा रहता । गूलर खाता रहता या गाता रहता । इससे उसकी पत्नी बहुत परेशान हो गयी । वह सोचती, इनके घर आने का कोई वक़्त ही नहीं है । न इन्हें मेरी कोई चिंता । यह दोस्ती तो जी का जंजाल बन गई । इसे तुड़वाना होगा ।

बस, एक दिन वह बहाना बनाकर चारपाई पर लेट गयी । मगर ने पूछा तो वह बोली ही नहीं । मुँह फुलाये पड़ी रही ।

तब मगर ने अपनी पत्नी की एक सहेली से इसका कारण पूछा । सहेली बोली – "तुम कैसे पति हो ? अपनी पत्नी की चिन्ता भी नहीं करते । उसे एक बड़ा भयानक रोग हो गया है ।"

मगर डर गया । बोला – "उस बीमारी की क्या दवा है ? तुम जानती हो ?"

वह बोली, "जानती तो हूँ पर तुम वह दवा ला नहीं सकते ।"

मगर ने उत्तर दिया, "ला क्यों नहीं सकता ? तुम बताओ तो सही ! मैं आकाश से तारे भी तोड़ लाऊँगा ।"

यह सुनकर उसकी पत्नी की सहेली बहुत गंभीर हो गयी । बोली, "यह रोग तभी दूर हो सकता है, जब तुम्हारी पत्नी को बंदर का दिल खाने के लिए मिले ।"

यह सुनकर मगर सचमुच घबरा गया । बंदर तो मेरा बहुत गहरा दोस्त है । मीठे-मीठे गूलर खिलाता है । उसका दिल मैं कैसे ले सकता हूँ ? यह तो दोस्त के साथ दुश्मनी करना है ।

पत्नी की सहेली बोली, "तभी तो मैं कहती थी ।"

मगर ने उस समय तो कोई उत्तर नहीं दिया, लेकिन वह सारी रात सोचता रहा – पत्नी मर गई तो उसका घर उजड़ जाएगा । बच्चे अनाथ हो जाएँगे । क्या करे वह ? उसने बहुत सोचा, बहुत सोचा । अंत में, वह इस नतीजे पर पहुँचा कि पत्नी को बचाना ही होगा । उसने अपनी पत्नी से कहा, "तुम दुखी क्यों होती हो ? बन्दर का दिल तो क्या पूरा बंदर ला सकता हूँ तुम्हारे लिए ।"

इस तरह पत्नी को समझा-बुझाकर वह बंदर के पास पहुँचा । और बातों ही बातों में उससे कहा, "भाई इतने दिन हो गए, हमको दोस्त बने हुए । लेकिन तुमने तो मेरा घर देखा ही नहीं अब तक । मेरी पत्नी से भी नहीं मिले । चलो, चलो आज मेरे घर ही आराम करना । दोनों दोस्त मिलकर वहाँ खूब खायेंगे और नाचे-गायेंगे ।"

बंदर तैयार हो गया । मगर ने उसे अपनी पीठ पर बैठाया, और घर की ओर चल पड़ा । रास्ते में बंदर को लगा कि मगर कुछ उदास है । उसने पूछा, "अरे मित्र ! तुम एकाएक उदास क्यों हो गए, क्या बात है ?"

मगर था तो जड़ बुद्धि । अक्ल जैसी चीज़ उसके पास थी ही नहीं । इसलिए ोला, "क्या बताऊँ दोस्त ! मेरी पत्नी को एक भयानक रोग हो गया है । किसी बंदर ा दिल खाने पर ही वह दूर हो सकता है । इसलिए मैं दुखी हूँ ।"

बंदर बहुत होशियार था । सारी बातें समझ गया । यह मगर तो बड़ा दुष्ट । झूठे बहाने बनाकर मुझे यहाँ ले आया । अच्छी बात है मैं भी इसे देखूँगा । दो ण चुप रहने के बाद वह बोला, "अरे मित्र ! तुमने यह बात मुझे पहले क्यों नहीं ताई ? मेरा दिल तो गूलर के पेड़ पर रखा हुआ है । तुम बता देते तो मैं तभी ले ाता ।"

मूर्ख मगर अब भी कुछ नहीं समझा । बोला – "तो चलो, वापस चलते हैं । ुम पेड़ पर से अपना दिल उतार लाना । उसे लेकर हम फिर वापिस आ जायेंगे ।"

और मगर ने बंदर को किनारे पर ले जाकर उतार दिया । बंदर कूदकर एकदम पेड़ पर चढ़ गया और वहीं से खिलखिलाकर बोला – "अरे मूर्ख, तू इतना भी नहीं जानता, दिल भी कहीं शरीर से अलग रह सकता है । मैंने तो तुम्हें मूर्ख बनाकर अपने प्राण बचाये हैं । अब मैं कभी तुम्हारे पास नहीं आऊँगा ।"

बेचारा मगर, ख़ाली हाथ अपने घर लौट गया । उसकी पत्नी भी तो यही चाहती थी ।

कानों का सुख

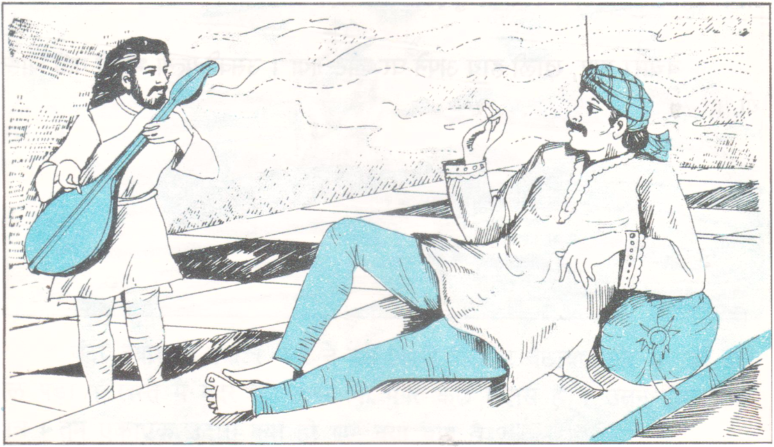

किसी नगर में एक गायक रहता था । वह बहुत सुंदर गाता था । एक दिन एक धनवान व्यक्ति ने उसे बुलाया और उसका गाना सुनाने की इच्छा प्रकट की ।

गायक तो यही चाहता था । उसने उस सेठ को कई सुन्दर-सुन्दर गाने सुनाए । सेठ बहुत खुश हुआ । उसने अपने खजांची को बुलाया और कहा, "इस गायक ने अच्छे-अच्छे गीत सुनाकर मेरा मन बहलाया है । इसे दो हज़ार रुपये दे दो ।"

"अभी लाता हूँ ।" यह कहकर खजांची वहाँ से चला गया । लेकिन कई घंटे बीत गए, वह लौटकर नहीं आया । तब गायक स्वयं उसके पास पहुँचा । लेकिन खजांची ने तब भी उसे रुपये नहीं दिये । गायक को बहुत गुस्सा आया । और वह सेठ जी के पास पहुँचा । कहा, "आपके कहने पर भी खजांची ने मुझे रुपये नहीं दिए ।"

सेठ ने उत्तर दिया, "उसने ठीक किया। तुम्हें रुपये देने की कोई आवश्यकता नहीं थी।"

गायक यह सुनकर हैरान रह गया। बोला, "मैंने आपको गाना सुनाया।"

सेठ ने उत्तर दिया, "हाँ हाँ, तुमने मुझे गाना सुनाया। मेरे कानों को सुख दिया। इसी प्रकार मैंने भी रुपये देने की बात कहकर तुम्हारे कानों को सुख दिया। हिसाब बराबर है। तुम्हें रुपये नहीं मिल सकते।"

बेचारा गायक निराशा होकर वहाँ से चला गया।

बेचारा नेवला

एक नगर में एक ब्राह्मण रहता था । उसकी एक पत्नी थी । कुछ दिनों के बाद उनके घर में एक बेटे का जन्म हुआ । वे बहुत प्रसन्न हुए । और ग़रीब होने पर भी बड़े प्यार से उसका लालन-पालन करने लगे । दोनों उसका बड़ा ख्याल रखते थे । कभी उसे अकेला नहीं छोड़ते थे ।

एक दिन उसकी माँ नदी पर नहाने के लिए गयी । वह अपने पति को अपने बेटे के पास बैठा गयी ।

अचानक उस नगर के राजा की दासी वहाँ आई और बोली, "महाराज, आपको अभी राजमहल चलना होगा । आपको पूजा करवानी है ।"

ब्राह्मण सोच में पड़ गया । अगर वह जाता है तो बेटा अकेला रह जाएगा । नहीं जाता है तो उसे दक्षिणा नहीं मिलेगी । वह करे तो क्या करे ? बहुत सोचने पर उसे एक उपाय सूझा । उसके पास एक पालतू नेवला था । उसे वह अपने बेटे की रक्षा के लिए उसके पास छोड़ गया । और स्वयं दासी के साथ चला गया ।

उसके जाने के कुछ देर बाद एक साँप वहाँ आया, और वह बालक की ओर चला । नेवले ने साँप को देखा । फिर बच्चे को देखा । वह बड़ा स्वामी भक्त था । स्वामी के बेटे के प्राणों की रक्षा करने के लिए उसने साँप पर हमला बोल दिया और उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले ।

थोड़ी देर बाद बहुत सारी दक्षिणा लेकर वह ब्राह्मण भी अपने घर लौटा । वला उसे दरवाज़े पर ही मिला । नेवले के मुँह पर खून लगा हुआ था । उसने समझा ७ इस नेवले ने मेरे बेटे को मार डाला है । बस, यह सोचते ही उसने एक बड़ा-सा त्थर उठा कर नेवले के दे मारा । बेचारा नेवला, उसी समय मर गया ।

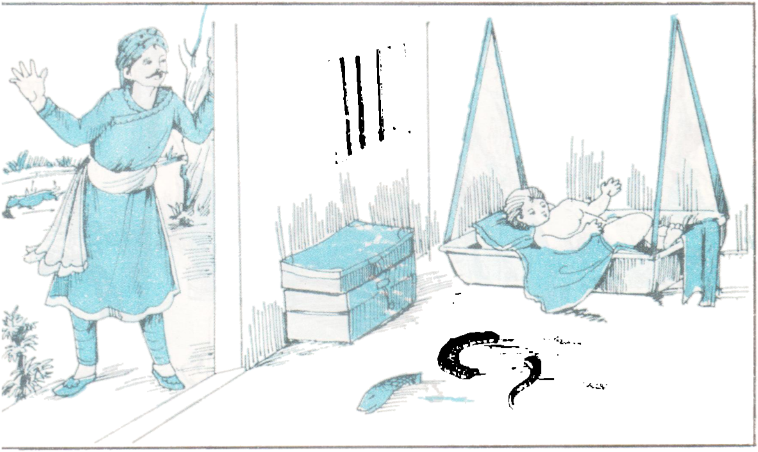

अब ब्राह्मण अंदर गया वहाँ उसका पुत्र बड़े आराम से लेटा हुआ था और सकी चारपाई के पास एक मरा हुआ साँप पड़ा था ।

यह देखते ही वह सब कुछ समझ गया । उसे बहुत दुख हुआ । लेकिन अब छताए होता क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत ।

रूई कैसे साफ़ की गयी

्क किसान था । था तो मेहनती; पर जब भगवान के यहाँ अक्ल बँट रही थी, तो ह कहीं सोया पड़ा था, इसलिए अक्ल नाम की कोई चीज़ उसके पास नहीं थी ।

मेहनत वह बराबर करता था । और इसीलिए एक बार उसके खेत में रूई हुत ज़्यादा पैदा हुई । उसे लेकर वह बेचने के लिए बाज़ार में गया, लेकिन किसी । भी उसकी रूई नहीं ख़रीदी । सबने यही कहा, "यह रूई साफ़ नहीं है । साफ़ करके ाओ ।"

वह बेचारा जानता नहीं था, कि रूई को कैसे साफ़ करना चाहिए । तभी उसने ख़ा कि एक आदमी एक सुनार के पास सोना लेकर आया, बोला, "मेरे इस सोने ो शुद्ध कर दो ।"

सुनार ने उस सोने को देखा, परखा । और फिर उसे आग में डाल दिया । वह शुद्ध हो गया ।

वह यह सब देख रहा था, बहुत खुश हुआ । घर पहुँच कर उसने बहुत-सी लकड़ियाँ और उपले लेकर आग जलाई । और फिर उसमें रूई को डाल दिया ।

देखते-देखते वह सारी रूई कुछ ही क्षणों में जलकर भस्म हो गई । शुद्ध रूई के स्थान पर उस मूर्ख के पास राख ही बच रही ।

गंजा मूर्ख

एक बार एक गंजा आदमी बन में फल खाने के लिए पहुँचा । था वह मूर्ख । वह यह नहीं जान पा रह था कि फल कैसे खाना चाहिए !

तभी एक दूसरा नौजवान मूर्ख वहाँ आया । उसके हाथ में बेल के बहुत-से फल थे । वह बहुत भूखा था, इसीलिए उन्हें तोड़ना चाहता था । इस गंजे मूर्ख को देखकर उसके मन में गुदगुदी होने लगी । उसने मज़ाक ही मज़ाक में एक बेल फल उसके सिर पर दे मारा ।

गंजा मूर्ख एक बार तो तिलमिला उठा लेकिन उसे भी बहुत भूख लग आई थी । और यह फल उसकी भूख मिटा सकता था, इसलिए उसने उस युवक से कुछ भी नहीं कहा । उसे डाँटा तक नहीं । बस बेल का गूदा खाने लगा ।

उस नवयुवक मूर्ख को यह देखकर और भी मज़ा आया । उसने दूसरा फल फिर उसके सिर पर मारा । तीसरा मारा, चौथा मारा, यहाँ तक कि उसके सारे फल ख़त्म हो गए । उधर गंजे का सिर भी खून से लथपथ हो गया।

यह देखकर वह नवयुवक डर गया, और वहाँ से चला गया । उसके बाद वह गंजा भी अपने घर लौट आया। उसके सिर को खून से भरा देखकर घरवालों ने घबराकर पूछा, "अरे यह सब क्या हुआ ? किसने मारा तुमको ।"

उसने उत्तर दिया, "एक नौजवान के पास बहुत सारे मीठे बेल के फल थे । वह उन्हें मेरे सिर पर फेंकता रहा, और मैं उन्हें खाता रहा । मीठे फलों के लिए क्या मैं इतनी चोट भी नहीं सह सकता था ?"

उसकी यह बात सुनकर सब लोग बहुत हँसे ।

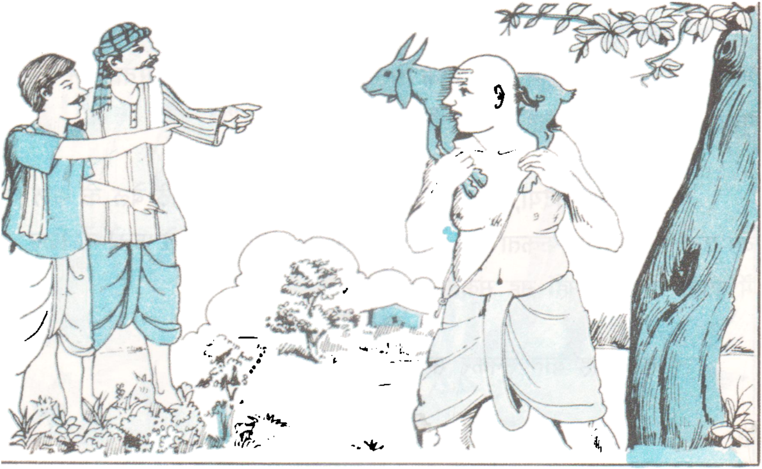

केसी गाँव में एक ब्राह्मण रहता था । एक दिन वह बकरा ख़रीदने के लिए एक गाँव या । एक अच्छा-सा बकरा उसने ख़रीदा, और उसे कंधे पर रखकर अपने घर की ओर चल पड़ा । रास्ते में कुछ धूर्तों ने उसे देखा, और सोचा कि किसी-न-किसी तरह स ब्राह्मण से यह बकरा छीनना चाहिए । आपस में सलाह करके उन्होंने एक योजना नायी । वे तीनों उस रास्ते पर तीन जगह जाकर खड़े हो गये ।

सबसे पहले पहला धूर्त ब्राह्मण को मिला । उसने कहा, "हे ब्राह्मण देवता ! तुमने स कुत्ते को अपने कंधे पर क्यों बैठा रखा है ।"

ब्राह्मण ने उस धूर्त की ओर देखा, और गुस्से में भर कर कहा, "क्या तुम अंधे ो । यह बकरा तुम्हें कुत्ता दिखाई देता है ?"

और वह आगे बढ़ गया। कुछ दूर पहुँचने पर उसे दूसरा धूर्त मिला । उसने भी बड़ा आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, "हे ब्राह्मण देवता ! तुम्हें क्या हो गया हैं ? तुमने कुत्ते को कंधे पर क्यों बैठा रखा है ?"

अब ब्राह्मण को कुछ शक़ हुआ । उसने बकरे को बहुत ध्यान से देखा । और फिर आगे बढ़ गया । कुछ दूर जाने पर उसे तीसरा धूर्त मिला । उसके साथ और भी कई आदमी थे । उन सभी ने कहा, "अरे, अरे देखो, यह ब्राह्मण देवता कुत्ते को कंधे पर बैठाकर ले जा रहे हैं ।"

और वे ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे । अब तो ब्राह्मण को विश्वास हो गया कि सचमुच यह बकरा नहीं कुत्ता है । मेरी ही मति मारी गई है, नहीं तो क्यों इतने लोग मेरा इस तरह मज़ाक उड़ाते ।

यह सोचकर उस ब्राह्मण ने बकरे को कंधे से उतारकर फेंक दिया । और तालाब में स्नान करके अपने घर चला गया ।

धूर्त तो यही चाहते थे । उन्होंने बकरे को पकड़ा । और उसे मार कर खा गये ।

सातवीं पूरी

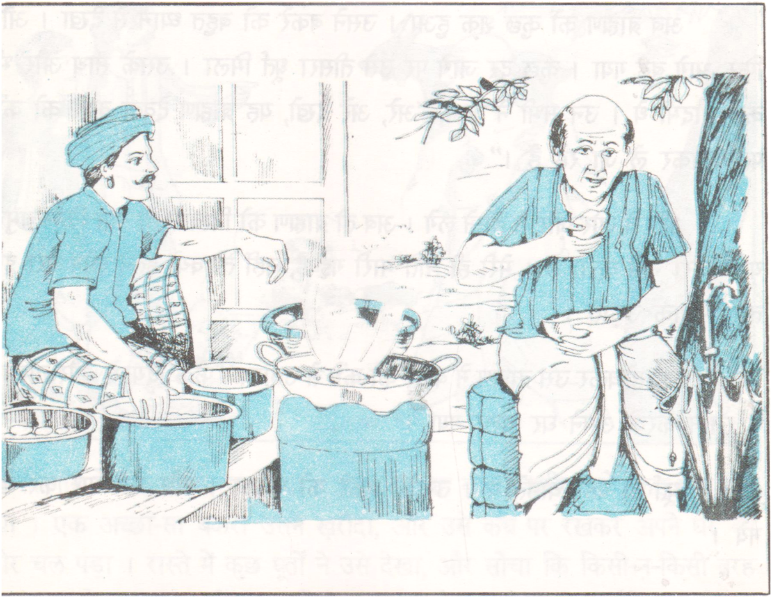

एक वज्रमूर्ख था । यानी उसमें अक़्ल का नामोनिशान भी नहीं था । एक बार वह कहीं जा रहा था । चलते-चलते रास्ते में उसे भूख लग आयी । थोड़ी दूर पर हलवाई की एक दुकान थी । जल्दी-जल्दी वह वहाँ पहुँचा । उसने उस दुकान से आठ पूरियाँ ख़रीदीं ।

फिर एक अच्छी जगह बैठकर उसने उन्हें खाना शुरू किया । एक पूरी खायी, दूसरी पूरी खायी, तीसरी पूरी खायी । लेकिन फिर भी उसका पेट नहीं भरा, इसलिए

उसने चौथी पूरी खायी, फिर पाँचवीं खायी, छठी भी खा गया। लेकिन उसका पेट अब भी नहीं भरा। तब उसने सातवीं पूरी उठायी और उसे भी पहले की तरह खा गया। लेकिन इस बार क्या हुआ कि उसका पेट भर गया।

हमने पहले कहा था न कि अक़्ल का नाम भी नहीं था उसमें। वह वज्रमूर्ख था। वह अपने आप से बोला, "सचमुच ही मैं मूर्ख हूँ। ज़रा भी अक़्ल नहीं मुझे। सोचो तो अगर मैं सबसे पहले इस सातवीं पूरी को खाता, तो मेरा पेट भर जाता, और वे छः पूरियाँ बेकार न जातीं। अब मैं ऐसी ग़लती कभी नहीं करूँगा। अब सबसे पहले सातवीं पूरी खाया करूँगा।"

मूर्ख सेवक

एक व्यापारी था । कपड़े का व्यापार करता था । दिसावर ले जाने के लिए उसने बहुत सारे अच्छे-अच्छे कपड़ों को चमड़े में लपेट कर ऊँटों पर लाद दिया ।

चलते-चलते उसके काफ़िले का एक ऊँट थक गया । व्यापारी ने सोचा, इसके स्थान पर मुझे एक और ऊँट लाना होगा ।

शहर जाते हुए उसने अपने नौकरों से कहा, "अगर मेरे पीछे वर्षा आ जाए, तो इस बात का ध्यान रखना कि चमड़ा भीग न पाए ।"

संयोग की बात, उस व्यापारी के जाते ही बड़े ज़ोर की वर्षा शुरू हो गयी । सेवकों ने सोचा इन चमड़े की पेटियों को भीगने से कैसे बचाया जाए ?

थोड़ी देर सोचने के बाद उन्होंने पेटियों में से कपड़े निकाले और सब पेटियों को उनसे ढक दिया । चमड़े की पेटियाँ भीगने से बच गईं, लेकिन कपड़ा सब भीग गया ।

व्यापारी जब लौटा तो उसने यह सब देखा, और अपना सिर पीट लिया, बोला, "अरे मूर्खों, तुमने यह क्या किया ?"

मूर्ख बोले, "आपने ही तो कहा था कि चमड़े की पेटियाँ भीगने न पाएँ । वे नहीं भीगी हैं । इसमें हमारा क्या दोष ?"

व्यापारी क्या करता ? जिन कपड़ों की रक्षा के लिए उसने चमड़े को भीगने से बचाने के लिए कहा था, उन्हीं कपड़ों को उन मूर्खों ने भिगो दिया । मूर्ख लोग जैसा उन्हें समझाया जाए, उसका उल्टा ही समझते हैं ।

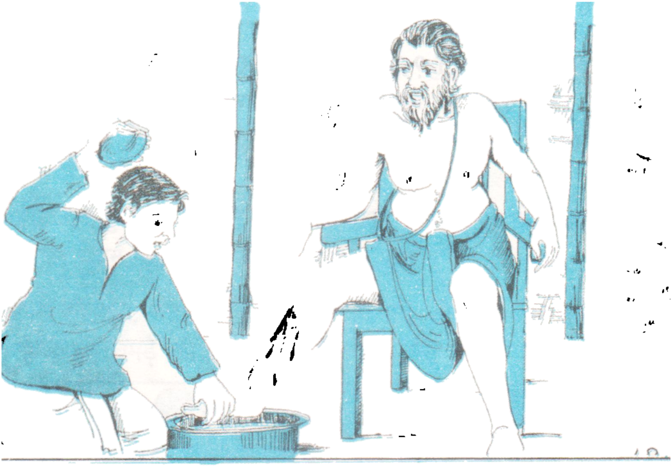

र की पाठशाला में एक गुरुजी रहते थे । इनके दो चेले थे । दोनों म
 दूसरे से बहुत जलते थे । एक शिष्य गुरु जी का दायाँ पैर मल-मलकर धो
ौर दूसरा चेला बायाँ पैर धोया करता था ।

एक दिन ऐसा हुआ कि गुरुजी ने उस चेले को जो, उनका दाहिना पैर धे
ो ज़रूरी काम से बाहर भेज दिया ।

उसके जाने के बाद गुरुजी ने बायाँ पैर धोने वाले अपने शिष्य से कहा, "अ
दायाँ पैर भी धो दो ।"

उस चेले ने उत्तर दिया, 'मैं उसका पैर नहीं धोऊँगा । वह मुझसे बहुत लड़

गुरुजी ने उसे बहुत समझाया, तो वह राजी हो गया । लेकिन उसके बाद उसने उस पैर को पत्थर मार-मार कर तोड़ डाला ।

गुरुजी दर्द के मारे चिल्लाने लगे । उनकी आवाज़ सुनकर दूसरे चेले दौड़े हुए वहाँ आए । और उन्होंने उस मूर्ख चेले को बहुत पीटा ।

दूसरे दिन दायाँ पैर धोने वाला चेला लौट आया । और कल जो कुछ हुआ था, उसका उसे पता चल गया । उसे बहुत गुस्सा आया और उसने तुरंत गुरुजी के दूसरे पैर को तोड़ डाला ।

इस प्रकार उन मूर्खों ने गुरुजी को हमेशा के लिए अपंग बना दिया ।

एक मूर्ख दामाद

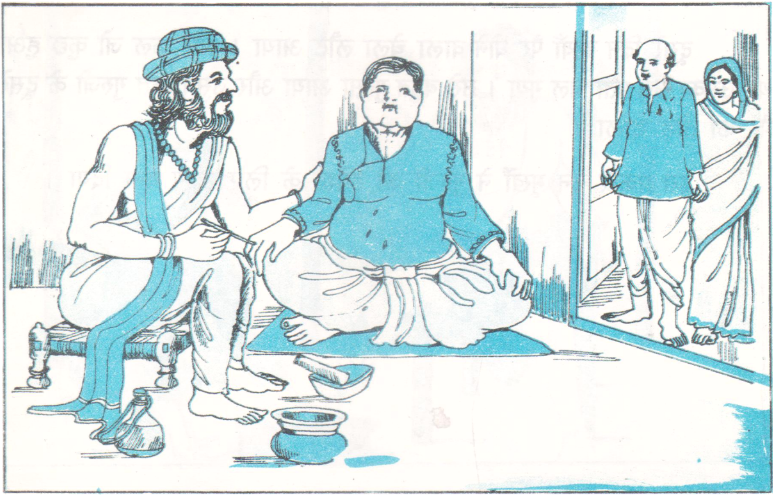

एक मूर्ख था । शादी के बाद वह पहली बार अपनी ससुराल गया । उसकी सास बहुत खुश हुई । उसने दामाद की आवभगत करने के लिए बढ़िया चावल निकाले । वह उनको साफ़ कर रही थी कि अचानक किसी काम से उसे बाहर जाना पड़ा ।

वह मूर्ख वहीं बैठा हुआ था । उसे वे चावल बहुत अच्छे लगे । जब सास बाहर चली गयी, तो उसने एक मुट्ठी भर कर चावल अपने मुँह में डाल लिए । इसी समय सास लौट आयी ।

वह मूर्ख घबरा गया । वह उन चावलों को न निगल सका न उगल सका । उसका मुँह फूल गया । और उसके लिए बोलना भी मुश्किल हो गया ।

यह देखकर उसकी सास बहुत परेशान हुई। यह अचानक मेरे दामाद को क्या हो गया ? उसने अपने पति को बुलाया। पति ने जब अपने दामाद का फूला हुआ मुँह देखा, तो वह भी घबरा गया। एक दम भागता हुआ, वैद्य जी की पास पहुँचा।

वैद्य जी ने आकर देखा तो कहा, "ऐसा लगता है कि इसके गले में फोड़ा है। इसकी ठोढ़ी में सूराख करना पड़ेगा, तब यह सारी मवाद बाहर आएगी।"

वह मूर्ख अब भी कुछ नहीं बोला। वैद्य जी ने उसके गले में सूराख किया। लेकिन यह क्या, उस सूराख में से तो चावल निकल रहे थे।

सास - ससुर ने जब यह देखा तो वे सब कुछ समझ गये। और अपने दामाद की मूर्खता पर खूब हँसे।

किसी नगर में एक सेठ रहता था । उसके पास बहुत धन था । लेकिन बुद्धि उसमें ज़रा भी नहीं थी । कंजूस वह इतना था कि वह हमेशा बिना नमक के सत्तू खाया करता था । किसी स्वादिष्ट भोजन का स्वाद कैसा होता है, यह वह जानता ही नहीं था ।

लेकिन एक दिन पता नहीं क्या हुआ, उसने अपनी पत्नी से कहा, "आज मेरा मन खीर खाने को कर रहा है ।"

पत्नी को अचरज तो हुआ, लेकिन उसने तुरंत खीर बनाकर तैयार कर दिया । उसका मन भी तो खाने को कर रहा था न !

लेकिन उस मूर्ख को इस बात का डर था कि कहीं कोई आ न जाए । इसलिए वह घर के अंदर छिपकर बैठ गया ।

संयोग से तभी उसका एक मित्र उससे मिलने के लिए आया । उसकी पत्नी से पूछा, "तुम्हारे पति कहाँ हैं ?"

पत्नी ने अंदर जाकर अपने पति से कहा, "आपका एक मित्र आपसे मिलने को आया है ।"

वह कंजूस यह सुनकर घबरा गया । उसने अपनी पत्नी से कहा, "मैं लेट जाता हूँ । तुम मेरे पाँव पकड़कर खूब ज़ोर से रोना शुरू कर दो । तुम्हारे रोने की आवाज़ सुनकर वह अंदर आ जायेगा फिर तुम से कुछ पूछेगा । तब तुम कह देना कि मेरे पति मर गये हैं । यह सुनकर वह चला जाएगा । उसके जाने के बाद हम दोनों मिलकर खीर खायेंगे ।"

पत्नी ने ऐसा ही किया । वह पति के पैर पकड़ कर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी । मित्र ने अंदर आकर पूछा, "क्या बात है ? तुम क्यों रो रही हो ?"

रोते-रोते वह बोली, "अभी थोड़ी देर पहले इन्होंने मुझसे खीर बनाने के लिए कहा था । लेकिन मैंने जैसे ही खीर बनायीं ये मर गये ।"

वह मित्र सब कुछ जानता था । समझ गया । यह सब बहाना है । उसे डर था कि मैं भी खीर खाऊँगा ।

यह सोचकर वह मित्र भी "हाय मित्र, हाय मित्र," कहकर विलाप करने लगा । उनकी आवाज़ सुनकर पास-पड़ोस के और भी लोग वहाँ आ गये । सेठजी की मौत का समाचार सुनकर सब उन्हें श्मशान ले जाने का इंतजाम करने लगे ।

उस समय उसकी पत्नी ने रोते-रोते उसके कान के पास मुँह ले जाकर कहा, "अब तुम उठ जाओ, नहीं तो ये लोग तुम्हें श्मशान ले जाकर जला डालेंगे ।"

कंजूस सेठ ने उसी तरह उत्तर दिया, "नहीं, जब तक यह मेरा मित्र यहाँ से चला नहीं जाता, मैं नहीं उठूँगा । यह मेरी खीर खाना चाहता है । मैं उसे ऐसा नहीं करने दूँगा ।"

और वह उसी तरह लेटा रहा । पड़ोसियों ने और रिश्तेदारों ने अर्थी तैयार की, उसे श्मशान ले गए । चिता पर रखा, लेकिन वह तब भी नहीं हिला । जब आग उसको जला रही थी, तब भी उसने अपने मुख से एक शब्द नहीं निकाला । अंत में, वह जलकर राख हो गया ।

इस प्रकार उस आदर्श कंजूस ने ज़रा-सी खीर के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया । इसके मरने के बाद उसके धन को दूसरे लोगों ने खूब भोगा ।

बिलाव और ब्रह्मचारी

उज्जैन नगरी में एक मठ था । उस मठ में एक ब्राह्मण रहता था । वह महामूर्ख था । उस मठ में बहुत-से चूहे भी रहते थे । और जैसा कि होता है चूहे रात को बड़ा उत्पात मचाते थे । बेचारा ब्राह्मण बिल्कुल नहीं सो पाता था ।

एक दिन उसका एक मित्र उससे मिलने आया । तब उसने उस मित्र को चूहों के उपद्रव की बात बताई ।

मित्र बोला, "अरे चूहों से छुट्टी पाना तो बहुत आसान बात है । अपने मठ में एक बिलाव पाल लो । वह इन सब चूहों को खा जाएगा ।"

मूर्ख ब्राह्मण ने कहा, "यह बिलाव क्या होता है ? मैंने तो कभी देखा ही नहीं ।"

मित्र ने उत्तर दिया, "अरे तुम बिलाव को नहीं जानते ? उसकी आँखों का रंग भूरा होता है । और शरीर का रंग पीला और मटमैला । उसकी पीठ पर सुनहले बाल होते हैं । वह गलियों में घूमता रहता है ।"

यह सब बताकर वह मित्र अपने घर चला गया । तब उस ब्राह्मण ने अपने शिष्यों को वहाँ बुलाया – "तुम सबने बिलाव की पहचान तो सुन ही ली है, कल एक बिलाव ढूँढ़कर ले आना ।"

गुरु की आज्ञा पाकर सारे शिष्य बिलाव को ढूँढ़ने निकल पड़े । वे बार-बार रटते रहते – "उसकी आँखें भूरी होती हैं । उसके बाल सुनहले होते हैं । वह अपनी पीठ पर बालों वाला मृगचर्म ओढ़े रहता है ।"

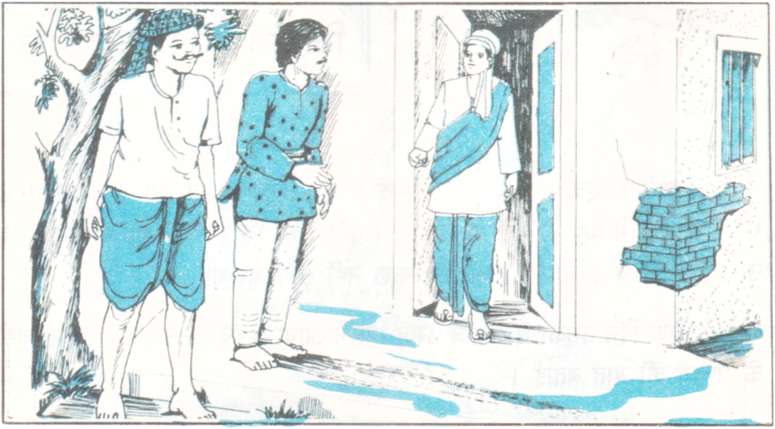

आखिर एक दिन उन्हें एक ऐसा जीव मिल गया । वह एक ब्रह्मचारी था । वे उसी को बिलाव समझ कर पकड़ लाये । गुरुजी ने भी उसे बिलाव ही समझा । और रात के समय कमरे में बंद कर दिया । सवेरे वह मित्र फिर आया । और उसने देखा कि कमरे में एक ब्रह्मचारी बंद है । उसने पूछा, "उसे क्यों बंद किया हुआ है ।"

मूर्ख ब्राह्मण ने उत्तर दिया, "तुमने ही तो कहा था बिलाव को पकड़ने के लिए । सो इसे पकड़कर हमने कमरे में बंद कर दिया ।"

यह सुनकर मित्र बड़े ज़ोर से हँसा । बोला, "तुम महामूर्ख हो । यह बिलाव नहीं है । यह तो ब्रह्मचारी है । बिलाव के चार टाँगें और एक पूँछ भी होती है ।"

यह सुनकर उन मूर्खों को बहुत दुख हुआ । उन्होंने ब्रह्मचारी को छोड़ दिया । लेकिन जब लोगों को यह कहानी मालूम हुई तो वे खूब हँसे ।

सुंदर बैल

किसी नगर के पास एक मठ था । उस मठ में बहुत-से मूर्ख रहते थे । उनमें एक धनवान मूर्ख भी था । किसी ने उसे बताया कि तालाब बनवाने से बहुत पुण्य मिलता है । इसलिए उसने मठ के पास एक तालाब खुदवा दिया और उसके चारों किनारों को बँधवा दिया ।

एक दिन उसने वहाँ जाकर देखा कि किसी ने उस तालाब के किनारे उखाड़ दिये हैं ।

दूसरे दिन गया तो भी उसने यही देखा । तीसरे दिन गया तो भी किनारे उखड़े हुए थे । वह सोचने लगा, "यह कौन है जो रोज़ आकर किनारे उखाड़ जाता है ।"

एक दिन वह बहुत सवेरे वहाँ पहुँचा । उसे बड़ा अचरज हुआ कि एक सुंदर बैल आकाश से उतर कर वहाँ आया, और उसने अपने सींगों से तालाब के किनारे तोड़ डाले । तब उस धनवान मूर्ख ने सोचा कि यह बैल हो न हो, स्वर्ग से आता है । तब क्यों न मैं इसकी पूँछ पकड़कर इसके साथ स्वर्ग चला जाऊँ ? यह सोचकर उसने बैल की पूँछ पकड़ ली । वह बैल उड़ गया, और उस मूर्ख को अपने रहने के स्थान कैलाश पर्वत पर ले गया ।

वहाँ खाने के लिए लड्डू-पेड़े जैसे बड़े स्वादिष्ट पदार्थ थे । वह मूर्ख वहाँ रहकर रोज़ उन्हें खाने लगा । वह बैल सदा की तरह रोज़ आता जाता था । मूर्ख ने सोचा, "क्यों न एक बार फिर इसकी पूँछ पकड़ कर मैं धरती पर हो आऊँ ?"

उसने ऐसा ही किया, और वह धरती पर पहुँच गया । वहाँ वह अपने सभी मित्रों से मिला । उसके मूर्ख साथियों ने उससे पूछा, "तुम कहाँ चले गये थे ?"

धनवान मूर्ख ने उन्हें सारी कहानी कह सुनाई । यह कहानी सुनकर उसके साथियों ने कहा, " हमें भी वहाँ ले चलो, हमें भी लड्डू खिलवाओ ।"

उस धनवान मूर्ख ने अपने साथियों को वहाँ जाने का मार्ग बता दिया । कहा, सबसे पहले मैं उसकी पूँछ पकड़कर लटक जाऊँगा । फिर तुम बारी-बारी से एक दूसरे 5 पैर पकड़कर लटक जाना ।"

वे सब बहुत प्रसन्न हुए । अगले दिन जब बैल आया, तो धनवान मूर्ख ने अपने ोनों हाथों से उसकी पूँछ पकड़ ली । दूसरे मूर्ख ने उसके पैर पकड़ लिए । तीसरे दूसरे के पैर पकड़े, चौथे ने तीसरे के । इसी तरह उन्होंने एक-दूसरे के पैर पकड़ ़ये । इस तरह एक ज़ंजीर-सी बन गयी ।

बैल उन्हें आकाश में ले उड़ा । ऊपर चलते-चलते अचानक एक मूर्ख ने उस नवान मूर्ख से पूछा, "तुमने जो लड्डू खाए थे, वे कितने बड़े थे ?" धनवान मूर्ख ने ाड्डूओं का नाप बताने के लिए जैसे ही बैल की पूँछ से हाथ हटाये, वैसे ही वे सारे ्र्ख एक साथ धरती पर आ गिरे और मर गये ।

विचित्र रास्ता

एक मूर्ख कहीं जा रहा था । रास्ता भूल गया । तब उसने किसी दूसरे आदमी से सही रास्ता पूछा ।

उस आदमी ने बताया,"नदी के किनारे जो पेड़ खड़ा है । उसके ऊपर के रास्ते से चले जाओ ।"

मूर्ख तो निरा मूर्ख था । वह सचमुच पेड़ के ऊपर चढ़ गया, और चलने लगा । उसके बोझ से पेड़ की शाखाएँ झुक गईं । बेचारा किसी तरह उन्हें हाथों से पकड़कर लटक गया ।

उसी समय एक हाथी सवार हाथी पर बैठा हुआ, नदी के बीच में से जा रहा था । मूर्ख ने उसे पुकारा, "मेहरबानी करके आप मुझे बचा लीजिए । नहीं तो मैं गिर कर मर जाऊँगा ।"

हाथीसवार दयावान था । वह हाथी को लेकर पेड़ के नीचे आया और उसने अपने हाथों से उस मूर्ख के पैर पकड़ लिये । लेकिन उसी क्षण हाथी चल पड़ा । बेचारा हाथी सवार भी उस मूर्ख के पैर पकड़े हुए लटक गया ।

यह देखकर उस मूर्ख ने हाथी सवार से कहा, "इस प्रकार लटके-लटके तो हम दोनों नदी में गिर कर मर जायेंगे । तुम गाना जानते हो तो गाना शुरू कर दो । शायद गाने की आवाज़ सुनकर कोई यहाँ आ जाए, और हमें बचा ले ।"

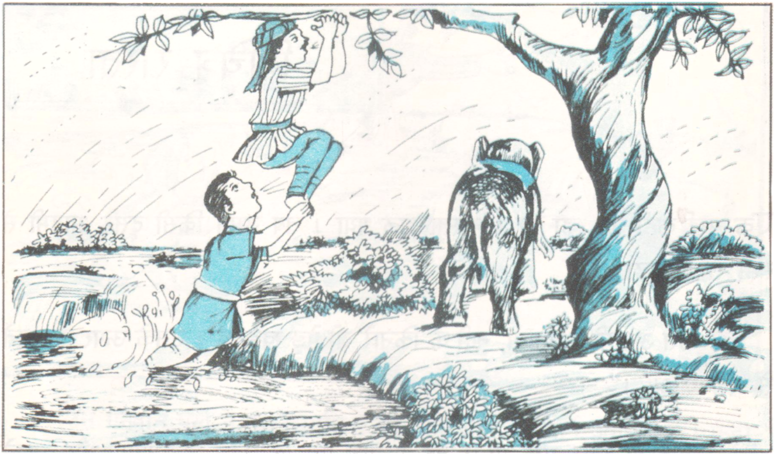

हाथी सवार सचमुच गाना जानता था । उसने गाना शुरू कर दिया । गाना बहुत सुंदर था । उसे सुनकर मूर्ख बहुत प्रसन्न हुआ और उसके गाने पर ताली बजाने के लिए अपने हाथों में पकड़ी पेड़ की शाखा छोड़ दी ।

ताली तो क्या बजती, वे दोनों उसी समय नदी में गिरकर न जाने कहाँ बहते चले गये ।

सुनो कहानी

साहित्य अकादेमी ने अपने बाल या किशोर पाठकों के लिए,अपनी स्थापना (1954 ई.) से अब तक ऐसा कोई प्रकाशन नहीं किया, जिस पर बहुत गर्व किया जा सके। दरअसल इस तरह की कोई परिकल्पना अब तक थी भी नहीं। इधर, पिछले कुछ वर्षों से अकादेमी इस अभाव को पूरी गंभीरता से महसूस कर रही थी और इसके प्रभारी सदस्यगण चाहते थे कि अकादेमी अपनी नवोदित पीढ़ी के लिए भी सार्थक और सोद्देश्य साहित्य प्रकाशित करे जो इस पीढ़ी का न केवल मार्गदर्शन करे बल्कि स्वस्थ और ज़िम्मेदार नागरिक बनाने की दिशा में सक्रिय भागेदारी कर सके। इस दृष्टि से न केवल कालजयी कृतियों के रोचक और प्रामाणिक रूपान्तर बल्कि समकालीन लेखकों की वे सशक्त रचनाएँ भी चुनी गयीं, जो हमारे बाल पाठकों के लिए रोचक और मनोरंजक तो हों ही, प्रेरणास्पद भी हों।

अकादेमी को इस बात की प्रसन्नता है कि इस प्रकाशन श्रृंखला की पहली कड़ी 'सुनो कहानी' प्रकाशित की जा रही है। 'कथा सरित्सागर' की बहुपठित और बहुश्रुत कहानियों के आधार पर इन कहानियों का रूपांतर हिन्दी के यशस्वी और वरिष्ठ कथाकार श्री विष्णु प्रभाकर जी ने किया है। सदियों से प्रचलित और अनेकों बार सुनी-सुनायी जाने के बावजूद ये कहानियाँ आज भी उतनी ही रोचक, मनोरंजक और प्रेरक बनी हुई हैं।

आशा है, हम इन पुस्तकों के द्वारा अकादेमी अपने नवोदित पाठकों तक केवल पहुँचेंगी ही नहीं,उनके बीच अपनी स्थायी जगह भी बना सकेंगी।

1-092-3

साहित्य अकादेमी

मूल्य